# आर्य सदुपदेश.

## प्रभु आर्य जनोनुं भलु करो



रचनार


## चुनीलाल ललुभाई पारेख

फोर्ट हाई स्कुलनो एक विद्यार्थी


" वृद्ध भरतखंडनी भूमि, पुरुषतानुं पालणुं, तने वंदन छे, अथा वा सभ्यतानी, प्रेमनी, कवितानी अने शास्त्रनी पिताभूमि हुं तने नमुछुं "




## मुंबाई

### आर्यमंडळ छापखानामां

ज य शं क र स र्वे श्व रे

छापी प्रगट कीधो.

ई. स. १८७९ संवत १९३५

**मूल चार आना.**

१२५५

## ग्रंथार्पण.

आ आर्यवृत मातानी कूखथी प्रगट थयेलां, सदगुणी अने स्वदेशाभिमानी कूळदीपक रत्नोने, तेमनां उत्तम सद्गुण अने सदाचरण निहाळी, अने तेमनी स्वदेश भक्ति अने स्वदेश प्रीति निरखि आ लघुग्रंथ अति उत्साहथी मानपूर्वक अर्पण करूंछुं.

कर्ता.

# प्रस्तावना.

आ चित्ताकर्षक देवभूमि, सुवर्णनी खाण, ईश्वरनी सर्वो तम अघात रचनाथी श्रृंगार पामेलो, पवित्र ऋषिमुनिओना देह धारणथी पावन थयेलो, अने पूर्वे उदयना प्रकाशित किरणोथी पृथ्वीपरना बीजा सर्व देशोने झांख पमाडनार आर्य देशनी, अने तेना उपर वसनारा विद्या कळा कौशल्यादि बाबतोमां संपूर्ण प्रविणता पामि प्रख्याति पामेला आर्यजनोनी अर्वाचीनकाळमां जे स्थिति थइ पडीछे ते विषे, तथा तेओ संबंधी बीजा केटलाक विषयो उपर लखवाने आज केटलाक दिवसो थयां भारी उत्कंठा हती, अने तेने मारा मित्रमंडळ (कलब के जेना सभासदो देशकल्याणना उत्तम कार्यों करवा प्रयत्न करेछे तेमां प्रभू तेमने साह्यकरो) तेनी तरफथी मळली वारंवार अमूल्य सुचनाथी तथा मारी उत्कंठाने बोधपत्र नामना एक मराठी लघुंग्रंथ वांचतां पुष्टी मळवाथी मारा प्रिय आर्यजनोने बे बोल कहेवानो आ प्रसंग मळवाथी मने घणो आनंद थाय छे.

में आ लघुग्रंथमां, नीति, सदाचरण अने स्वदेशाभिमान आदि बाबतोमां साधारण विचार दर्शाव्याछे, तेथी आ ग्रंथ सर्वेने उपयोगी थइ पडशे. कारण के स्वदेश सुधाराना सैन्यनो पक्ष करी, स्वदेश कल्याणार्थ, कुधारानो पराजय करवा सुधारारूपी विजयी रणक्षेत्रमां घुमी स्वदेशनुं भलुं थाय एम करवुं ए सर्व देशाहितेच्छु पुरूषोनो मुख्य धर्म छे.

# પ્રસ્તાવના.

આ પુસ્તક બાળબોધ લીપીમાં લખવાનું કારણકે હાલમાં સર્વ ઠેકાણે તેનો પ્રચાર વધારે થવાલાગ્યો છે, વળી આપણી ઉત્કૃષ્ટ સંસ્કૃત ભાષાના ગ્રંથો પણ તેજ લીપીમાં પ્રગટ થયાછે; તેથી તે સાથ આપણો સંબંધ જોડાયાથી તેવા ગ્રંથો વાંચવા આપણું મન વધારે પ્રેરાય.

આ પુસ્તક પ્રસિદ્ધ કરવામાં એક સુજ્ઞગ્રહસ્થ તરફથી મને જે ઉત્તમ પ્રકારની સાહ્યતા મળી છે તેને માટે તેમનો અંતઃકરણથી આભાર માનુંછું; તેમજ મારા પરમસ્નેહિ મિત્ર ભાઈ મોતીલાલ જમનાદાસ સરાફ તરફથી તથા મહાસુખભાઈ હરગોવિંદદાસ તરફથી આ પુસ્તકના સંબંધમાં ને કંઇ મદદ મળીછે તે માટે તેમનો ઉપકાર માનુંછું.

છેલે આ પુસ્તક વાંચનાર સર્વ સજ્જનોને હું નમ્રતા પૂર્વક વિનંતિ કરૂંછું કે, આ મારો પ્રથમનો પ્રયત્ન જાણી તેમાં જે ભૂલ હોય તે સુધારી વાંચવી અને તેમાંથી જે યોગ્ય લાગે તે ગ્રહણ કરી સદગુણી થવું.

ચુ. લ. પા.

# आर्य सदुपदेस.

## प्रभु प्रार्थना.

हे ! सच्चिदानंद, सर्वज्ञ, सर्वांतर्यामी, परब्रह्म, परमकृपाळुं, परमात्मा ! हुं तने प्रणाम करुंछुं. हे ! सृष्टिसर्जन, प्राणीमात्रना पिता, दयासागर, अनाथना नाथ, रंक रक्षक ! हुं तारी प्रार्थना करुंछुं. हे प्रभु ! सर्व शक्तिमान, न्याय स्वरुप, हुं तने सर्वात्मभावे वंदन करुंछुं. हे विभू ! तारो अकळकळा, तारी अद्भूत शक्ति, अने तारुं अपार डहापण, मनुष्यनी बुद्धिने भ्रमित करे छे. हे भक्तवत्सल ! तुं सर्वोत्तम छे. हे सर्व शक्तिमान महापिता ! हुं तारो रंक बाळक, तारे सर्णागत आवी, नमीनमी

विनवुंछुं के मने तारी सेवामां अंगीकार करजे; मारी प्रार्थनानो स्विकार करी, स्वदेश कल्याण अर्थे मारी अभिलाषा पूर्ण करजे; अने मारा सर्व मानव बंधुनुं कल्याण करजे.

प्रिय आर्य बंधुओ !

मारे तमने थोडां शुभ वचन कहेवां छे, ते उपर लक्ष आपो, कृपा करी श्रवण करो. जो ते तमने उपयोगी लागे तो तमारा ह्रदयमां कोतरी राखो, जो ते तमने मूल्यवान लागे तो तमारा काळजामां कोरी राखो, अने आ लघु ग्रंथमां दर्शावेलो सुबोध जो तमोने योग्य लागे तो ते ग्रहण करी ते प्रमाणे वर्तो, के जेथी मारो श्रम सफळ थयेलो हुं समजुं.

सत्य ए मनुष्य जातनो सर्वोत्तम सद्गुण छे. सत्यनो बेली

ईश्वर ए वात अनुभवसिद्ध छे, वा स्ते सत्यनो स्विकार करो. सर्व वा तमां, सर्व प्रसंगे, सर्व समये, सत्यने आधिन रहो. सत्यने मान आपो. "सत्योजय अने पापोक्षय" ए शब्दोनुं वारंवार स्मरण कर्या करो. सत्यनो कदी अनादर करवो नहि. असत्य बोलवुं नहि. असत्यने पडछाये पण उभा न रहो. असत्यथी सृष्टि चालती नथी. सत्यवादी थाओ. सत्यवादी पुरुषो कदी अपराध करता नथी. अने क्वचित थाय छे तो तेनो स्विकार करी, प्रश्चाताप करे छे. अने फरीथी एवुं नहि करवा पण ले छे. जे दुष्टो, सत्यवादी अने विश्वासु पुरुषोनो घात करे छे, तेनो भार आ पृथ्विमाता सहन करी शक्ति नथी. सत्यथी संपादन करेली कीर्त्ति यावच्चंद्रादिवाकरौ रहे

छे, जेनुं प्रत्यक्ष प्रमाण जोवुं होयतो वांचो सत्यवादी सूर्यवंशी राजा हरिश्चंद्रनुं आख्यान !

खोटी शाक्षी पुरता नहि. खोटी शाक्षी पुरवामां अघोर पाप थाय छे. खोटी शाक्षी पुरनार पुरुष ईश्वरनो दोषवान अने पापीओनो पापी छे. खोटी शाक्षी पुरवामां आत्महत्या जेटलुं पाप कहेलुं छे. माटे ए प्रमाणे करवानो स्वप्नामां पण विचार लाववो नहि. हमेशां परमकृपाळुं, महाप्रतापि पिता, परमात्मानो भय राखो. जेने ए जगतपाळक न्यायी प्रभुनो भय छे तेने बीजा कोईनो भय नथी. सघळां दुर्व्यसनोनो त्याग करो, एटलुंज नहि पण तमारा कोइ देशी भाई अथवा मानव बंधुमां जो कंइ दुर्व्यसन होय, तो ते तमारा पो-

तानामांज छे एम समजी, तेने सुबोध करी, ते पापना पंजामांथी तेने विमुक्त करो. शुभाषित वाणी बोलवा ईश्वरे निर्माण कीधेला मुखमांथी नीच शब्दो भाखी तमारी जीभने कदी अपवित्र करता नहि. स्वदेशना कायदा कानुनोने मान आपी, स्वदेशाधिपतिनी आज्ञा हमेश मान्य करवी ए विद्वान पुरुषोनां लक्षण छे. तमज मात पितानी आज्ञा पाळवी ए मातपिता प्रत्ये पुत्रनो मुख्य धर्म छे, तेने लक्षमां राखो.

तमारा पुत्र पुत्री आदिक बाळकोनां कोमळ मन, सत्संग, सद्विद्या, अने सद्गुणथी भरो. मोटुं करज कदी करवु नहि. ज्ञानी पुरुषोने करज जेवुं कठिण कष्ट बीजुं एके नथी. करज, ए समय आवे आत्महत्या घातक कार्य पण करावे छे. मनुष्य म-

लीनपणुं दूर करी जेम बने तेम स्वच्छ रहेवुं. स्वच्छता ए आरोग्यतानुं मूळ साधन छे. शरीरप्रकृति निरोगी रहे तेने माटे मिताहारी थवानी अति अगत्य छे. ब्रह्मचर्यव्रत योग्य वय पर्यंत अवश्य पाळवुं जोइए, कारण के एथी आयुषमां वृद्धि थाय छे, शरीर बळवान थाय छे, मन शक्ति प्रबळ थाय छे, अने तर्क शक्ति सुधरे छे. ए वात धनवंत्रीना सुश्रुत अने चरक ए वैदक शास्त्रोना ग्रंथो उपरथी तेमज मनुस्मृति आदि वेदादिक सत्य शास्त्रो उपरथी सिद्ध थाय छे.

प्रिय आर्यो ! तमे तमारां बाळकोना बाल्यावस्थामां कदी लग्न करशो नहि. बाळलग्न तमारां बाळकोनुं जीवतर धूळधाणी करी नाखनार छे. बाळ लग्न तमारां बाळकोने शौर्यहिन, नामर्द

अने परतंत्र बनावनार छे. आर्य बंधुओ! बाळलग्ननो चाल, तमारो कट्टो वैरि, तमारुं तन मन अने धन हरी लेनार, तमारी आखी प्रजाने बळहिन करनार छे. साहस, शौर्य अने धैर्य आदि सद्गुणोने लय पमाडनार छे, अने शीयळ व्रतनो ए घातकी शत्रु, एक आखा देशनी कीर्तिने निस्तेज करनार छे. टुकामां बाळलग्न ए कजोडा रूपी झेरी फळनुं वृक्षछे. माटे बंधुओ! बाळ लग्ननुं नाम स्वप्नामां पण नहि दता. तमारां कोमळ बाळकोने बाळलग्न रुपी विकाळ व्याघ्रना झेरी पंजामां न सपडावो. कोमळ करमां दीपक धरी कुवे न पडो. छतां चक्षुए अंध थइ तेओने दुःखना कुवामां हडसेली न मेलो. जो तम तमारां बाळकोनां खरांज हेतस्वी हो, तो योग्य, डाहयां,

अने ज्ञानी वरकन्या साथे तेओनां लग्न करो.

अधम कुळने उत्तम कुळ गणी तमारा पुत्रपुत्रीओनो जन्म व्यर्थ करी नाखता नाहे. उत्तम कुळ तो अनेज कहेवुं के,

## दोहरो

सद्विद्या सद्गुण सधन, सदाचार सुविचार;
उत्तम कुळनो भेत के, जे घेर सुखी नरनार १

आवुं उत्तम कुळ जोई सुखेथी लग्न करो.

दुर्गुणोने तमारो स्पर्ष पण थवा नहिदो. सत्संग राखो. सज्जन साथ मैत्री करो. उध्योग करो. काळ अति अमूल्य छे. ते पवननी माफक उडी जाय छे, नादिना पाणीनो माफक वही जायछे, अने पंखीनी पांखनी त्वराथी पण वेहलो चाल्यो जाय छे.बी-

ति वेळा पाछो आवती नथी, जे घडी जाय छे ते आयुष्यमांथी घटेछे, माटे अमुल्य वखत नकामो न गाळो. तेनो शुभ उपयोग करो. आळसनो त्याग करी; परोपकारनां उत्तम कार्यो करवा तत्पर थाओ. प्रियाचरणथी विद्या अने ज्ञाननी वृद्धि थाय एवो वादविवाद करो. स्वदेश कल्याणना कार्यो करवामां तमारा कीमती काळनो उपयोग करो.

जे देशमां जन्म धर्यो ते देशनुं अभिमान धरी तेनुं सर्व प्रकारे कल्याण करवा, तमारां तन मन अने धनथी हरनिश तत्पर रहो. जे पुरुषमां स्वदेशाभिमाननी काळजी नथी ते पुरुषातन विनानो छे. तमारा स्वदेशमां पुष्कळ पुस्तको प्रसिद्ध थाय, अने तेना वांचनाराओनी संख्या दिन प्र-

तिदिन वृद्धि पामे, एवा प्रयत्नो करो. विविध प्रकारनां सुबोधकारक पुस्तको अने वर्तमान पत्रो प्रसिद्ध करो, अने तमारा देशी बंधुओ आ सृष्टिनुं खरुं सुख अने वैभव भोगववा समर्थ थाय एवुं करो. देशी कारीगरोने उत्तेजन आपो. देशमां भिक्षुकोनी संख्या ओछी थाय तेम करो; कारण के जे देशमां भिक्षुकोनी संख्या वधारे ते देश दरिद्र गणाय छे. कोईनी साथे वैरभाव राखता नहि, कारण के एथी वखते महा अनर्थ थाय छे. उत्तम पुरुषोनी निंदा करवी ए अधम पुरुषनुं काम छे. शुभकार्य करवामां ऐक्यता ए तेना सारा परिणामनुं शुभ चिन्ह छे. ऐक्यताविना कोई पण शुभ कार्य थवुं अशक्य छे. रणक्षेत्रमां ऐक्यता विजय पमाडे छे. माटे तमारा देशमां विज-

यवंत ऐक्यतानां शुशोभीत देवाळय बांधो; अने पछी जुओ के ते संपेश्वर महादेवनां दर्शनथी, स्वदेश बंधुओ, पूर्वेनी माफक किर्तिना अचल अमर दूर्गो बांधवा केवा समर्थ थाय छे ?

वेपार ए देशनी उन्नतिनुं एक अमूल्य साधन छे, कारण के वेपारे वसतो लक्ष्मि. वेपारनो कंई पार नथी. वेपारथी देशने सर्व प्रकारे लाभ छे.माटे देशमां वेपार वधे तेवा उपायो योजो. देश उन्नतिनुं बीजुं अमुल्य साधन खेती छे. खेतीवाडी उपर सर्वना प्राणनी दोरी लटकेली छे. "अन्न समान प्राणमाहि" ए वात सिद्ध छे. वास्ते खेतीवाडीना साह्यत्यमां सुधारो करवा कृषि शास्त्रनो अभ्यास करो. सर्व काममां यथायोग्य प्रयत्न करी फळ मेळववा परम कृपाळुं ईश्वर उपर आधार राखो. प्र-

भू जे करशो ते उत्तमज करशो एवो द्रढ विश्वास राखो. कोई साथे क्लेश, कुसंप, कंकास, कदी करता नहि, अने क्वचित थाय तो चार स्नेहि सद्ग्रहस्थो समजावी जे निर्णय लावे ते मान्य राखो. पंच त्यां परमेश्वर ए केहवत सदा याद करो. अदालतोमां कजीआ लठी पैसा पाणीमां नहि नाखो, अने कीमती काळ व्यर्थ न काहाडो, पैसानो तेमज वखतनो शुभ उपयोग करो.

मेहेनत करवाथी कदि कंटाळता नहि. स्वदेशमां ग्रंथ कर्त्ताओने उत्तेजन आपो. देशाटन करवाथी ज्ञानमां वृद्धि थाय छे, उत्तम प्रकारनो अनुभव मळेछे, देश परदेशमां कीर्त्ति वधे छे; सहन शक्ति घाडी थाय छे, अने ए आदि अनेक लाभ प्राप्त थाय छे माटे देशाटन करो. विदेशमां देशाटण करवा

साहित्य अने हिमत न होय तो पण अवश्य तमारा स्वदेशमां खूणे खूंचरे फरी गुप्त रहेली अमुल्य चीजो प्रकाशीत करो. विविध शास्त्रादिक पुस्तकोनुं वंचन करो, सत्यनो शोध करो. मंत्र, जंत्र, सुकन, किमिओ अे सर्व मात्र भ्रांति छे. सज्जन पुरुषोनो समागम राखो. कोइनो पण विश्वासघात करता नाहि.

क्षमा जेवो बीजो सद्गुण एके नथी. जेना हस्तमां क्षमा रुपी सहस्त्र रमी रहयुं छे तेने दुष्टोनो शो डर छे! क्रोध करतां क्षमा करवी अे महात्म पुरुषोनुं लक्षण छे. मातापिताए बाळकोने बाळ्यावस्थामांथीज क्षमा करवानी विद्या शीखववी जोइए. उत्तम पुरुषो, क्षमाना सद्गुण रुपी सृंगार सजी पोतानुं वदन हमेशां प्रकाशीत

राखे छे, माटे हरनीश क्षमानो सदगुण रुपी शृंगारसजो पण महा अपराध करनारने क्षमा करवामां पाप छे, तेनो पण वीचार करजो.

भांग, दारुं, जुगार आदि व्यसनोना फांदामां जरापण फसाता नहि,अने फसायलाने मुक्त करवा उत्तम प्रकारनो सुबोध करो. व्यसन, बुद्धिने क्षिण करे छे, ज्ञानमां घटाडो करे छे, अने आयुष्य टुकुं करे छे. माटे बंधुंओ ! व्यसननी जालमां कदी सपडाता नहि. काम, क्रोध,लोभ, मोह, मद अने मत्सर ए मनुष्यना षटरीपू छे माटे तेनो त्याग करो. काम मनुष्यने अंध बनावे छे. परस्त्री परकदो कूद्रष्टि करता नहि "Look at old as YOUR MOTHER AND YOUNG as YOUR SISTER" अर्थ,वृद्ध स्त्रीने मा-

ता सम लेखो, अने युवानने बेहेन स-
म गणो.

### तुलसीदास कहे छे के.

### दूहो

सत्य वचन ओर लीनता, परस्त्री मात समान;
इतनेकीमे हरि न मिले, तो तुलसीदाश जमान. १

क्रोधने कदी वश थता नहि. क्रोधाग्नी-नी ज्वाळा महाश्रमथी संपादन करेली कीर्त्तिनो पलकवारमां नाश करी नाखे-छे. "AngeR is a SHORT maD-Ness" क्रोध ए एक जातनुं घेलापणुं छे. वळी "लोभे लक्षण जाय" अने "अति लोभ अे पापनुं मूळ" अे कहेवतो सर्व कोईने जाणीती छे. माटे लोभी थवुं नहि. जे कंइ मळे ते उपरज संतोष पामवो. "संतोषि नर सदा सुखी." मद अथवा अहंकार ए मनुष्य जातनो एक मोटो दुर्गुण

छे. कोई पण अहंकारी सुखी थयो नथी. रावण सरखा योध्याओ पण मदना आवेशमां रोळाई गया छे. माटे अहंकार न करो. दयावान थाओ.

दूहो

दया धर्मको मूळ हे, पाप मूळ अभिमान;
तुळसी दया न छांडीये, जब तक घटमें प्राण. १

ए दुहो अहर्निशयाद करो. जीव हिंसा कदी करता नहि. जेवो आपणो प्राण तेवोज अवरनो छे. अने जेम आपणने दुःख थाय छे तेमज अवरने थाय छे ए वात निश्चे मानो.

देशी कारीगरोने उत्तेजन, ए देश उत्कर्षनुं एक आनंदाधक चिन्ह छे. देशीकारीगरो अने हुन्नरीओने उत्तेजन मळे, माटे बनता सुधी स्वदेशनो माल उपयोगमां लाववानी मोटी अगत्य छे. बाळकोने प्रथम संपूर्ण वि-

द्याभ्यास करावी, विविध प्रकारनुं ज्ञान आपो, सदुपदेश करो, आ जगतने विषे तेओना ईश्वर, माबाप अने भांडु वगेरे प्रत्ये शा धर्म छे, ते समजावो, तेओने ज्ञानी, सद्गुणी सत्यवादी अने स्वदेशाभिमानी बनावो. बाळकोने सद्विद्यानो वारसो आपो. लक्ष्मि धनना वारसा करतां विद्या धननो वारसो अति उत्तम छे. लक्ष्मि धनने चोर चोरी जशे, अग्नि बाळी भस्म करशे, अने दुष्ट कोइपण प्रकारे हरी जशे; पण विद्यारूपी गुप्त धननुं कदी हरण थनार नथी. जो तमे तमारां बाळकोनां मन विद्यारूपी जोतथी प्रकाशीत करशो तो तमे तेओने पूर्ण भाग्यशाळी बनाव्यां एम निश्चय मानजो. एक विद्वान कहेछे के.

माता शत्रु: पिता वैरी, येन बाळो न पाठीत:
न शोभते सभा मद्ये. हंस मद्ये बकोयथा.

अर्थ--जे मातापिता पोताना पुत्र पुत्रीओने विद्या शीखवतां नथी ते तेओनां वैरी छे, ते बाळको जेम हंसना टोळामां बगलो शोभतो नथी, तेम विद्वान पुरुषोनी सभामां शोभतां नथी.

एक सुंदर, सकोमळ, सुर्यसम कांतिमय बाळक मनोहर स्वरुप छतां, लक्ष्मिमां दटायलुं होवा छतां, अने उत्तम कूळमां जन्म लेवा छतां, जन्म सफळ करे नाखे अेवी विद्या देवीनी प्रसादि पामवा दुर्भाग्य रहयुं, तो ते सुगंधी विनाना शोभायमान फूळ जेवुं छे.

विद्याहिन मनुष्य पशुनी पदवीने योग्य छे, विद्यार्थी सर्व सुख अने वैभव प्राप्त थाय छे, विद्यार्थी मनुष्य यश

रुपी सुगंधीदार पुष्पोना हार पहेरे छे. विद्या कीर्तिनां वाजीत्र वगडावे छे. विद्या विदेशने विषे परमप्रिय स्नेही छे. उत्तम कुळमां जन्म पामेला पण विद्या संपादन करवा दूर्भाग्य रहेला मनुष्यनुं कुळ अधममां अधम गणाय छे. अने नीच कुळमां जन्म पामेलो, पण विद्या देवीने प्रसन्न करी प्रसादी पामेलो वीरलो जन सर्व स्थळे पूजाय छे. विद्या, माता प्रमाणे रक्षण करे छे, पिता प्रमाणे पोषण करे छे, पत्नि प्रमाणे दुःख दूर करे छे अने सर्व संपत्तिनी वृद्धि करे छे. टुंकमां विद्या, देश उन्नतिनो मूळ पायो छे. माटे प्रीय आर्यो ! तमारां पुत्र पुत्रीओने विद्यानां सुखमय फळ चखाडो. निश्चय मानजो के मात्र विद्या देविना प्रतापथीज

मनुष्य आ भवसागर तरवा समर्थ थाय छे.

### शामळभट कहेछे के

## दोहरो

विद्यामुळ छे मोक्षनु, तत्वतणुं छे तत्व.
सूखनु मूळतो शारदा, शास्त्र सकळनू सत्व ?
विद्यावश सहु देवता, विद्यावश कुळकर्म,
विद्यावश सहु इष्टछे, विद्यावश धन धर्म.

व्यवहारमां कुशाळ रहो. जेटली बने तेटली अवरनी प्रीति संपादन करो. मनमां गर्व लावी रंक अने गरजवाननो कदि धिक्कार करता नहि. अतिशय धर्माभिमानी थइ बीजापर द्वेश करवो, क्लेश कंकासनुं बी रोपवुं अने धर्मना नामे कोईने पण दुःख देवुं ए मूर्खपणाना चिन्ह छे. मनुष्यनी योग्यता हमेशां लक्षमां राखो. जे बाब-

त तमे समजवा अशक्त हो ते बीजा पासेथी शीखी लो. मनमां अेवो खोटो गर्व ना लावो के हुं सर्व वाते परीपूर्ण छुं, अथवा मारामां संपूर्ण ज्ञान छे. सर्वदा एम समजो के हुं ज्ञानमां पाछळ छुं, अने एम समजवामांज तमारी शोभा छे. कोईनो उपर जुलम, पक्षपात अथवा अन्याय कदि करवो नहि. देशाटण करनारा साहसिक पुरुषोने साह्य करो. गरीब अने अशक्त मनुष्योने मफत ओषध मळे, तेने माटे दयाळु थइ, औषधशाळाओ स्थापो. भूला पडेलाओने मार्ग देखाडो. तन रुपी नगरीमां व्याधी प्रवेश करे के त्वराथी औषधनी पेरवी करो.

मूर्ख पुरुषोनो समागम कदि राखता नहि. मूर्ख पुरुषोने उपदेश झेरो-

बाण जेवो लागे छे. जेम घरने आग लागे तो ते ओलववा जळ एक मार्ग छे. सूर्यना तापथी देहनुं रक्षण करवा छत्रो एक साधन छे. उन्मत्त हाथी तीक्षण अंकूशथी अजा सम बनी जाय छे, जे गाय आदि जनावरो काष्टना कडकाथी पांसरां थाय छे अने जेम अनेक प्रकारना औषधथी अनेक रोग टळी जाय छे, तेम मूर्खने सुधारवाने आ अवनिने विषे नीतिज मात्र उत्तम औषध होय एवुं देखाय छे. जेम सर्पने दूध पायाथी तेनुं झेर वधे छे तेम. मूर्ख सुबोधनावे शब्दो सांभळवाथी अति क्रोधायमान थाय छे, माटे सज्जनोए आवा नीच मूर्ख पुरुषोनो कदापी संग करवो नहि. संग करवो तो उत्तमनोज करवो. कारण केहेवत छे

के " सोबत तवी असर, अने संगत तेवां फळ."

श्रीमंतोमां नम्रता अने गरीबोमां उद्योग अवश्य होवां जोइअे. उदय पछवाडे अस्त अने अस्त पछवाडे उदय, चडती पछवाडे पडती अने पडती पछवाडे चडती सुख पछवाडे दुःख अने दुःख पछवाडे सुख, ए तो आ सृष्टीनो नियमज छे. माटे चडतीना समयमां पैसाना मदथी फुलाई जई हुंज आ जगतनो राजा छुं एवो गर्व कदि लाववो नहि, अने पडतीमां संकट समये हिमतहारी जवी नहि. जे कंइ आवी पडे ते धैर्यथी सहन करी, संकटमांथी विमुक्त थवा प्रयत्न करवा.

सद्बुद्धि जेवो बीजो गुरु एके नथी. जे कंइ करवुं ते विचारीनेज करवुं, कारण के "ऊतावळा शो बावरा अ-

ने धीरासो गंभीर " पण समयसूचकता ए चतुर पुरुषनो चातुरी छे. जे काम पोताथी थाय ते बीजा उपर न नाखवुं, अने जे काम आजे थाय तेने काल वास्ते न राखवुं. कारण के देहनो भरुसो नथी. योग्य होय तेज करवुं एटले लज्जात थवुं न पडे. समय ने अनुसरी वर्तवुं पण नीति ने अळगी करवी नहि. मन सुधारवा साथे तन सुधारवाने कदी वीसरवुं नहि, कारण के मनने ने तनने घाडो संबंध छे. जेना मुखमांथी असभ्य अने हलका शब्दो नीकळे तेने मूर्ख अने अज्ञान समजी तेनो त्याग करवा पहेलां तेने सारो सुबोध आपवो.

प्रिय आर्य बंधुओ ! अविचारपणे खर्च करवो नहि, कारण के उडाउ खर्च करवाथी मोटा मोटा राजा रजवाडा

अने शेठ शाहुकारो करजवान थइ पायमाल थइ गयाछे. मेहेनत करो पण भिक्षावृति कदि करता नाहि. मेहनत करवा कंटाळता नाहि, कारण के मेहेनत वगर कंइ प्रात थतु नथी. जेनामों उध्योग, साहस, धैर्य, शक्ति, अने पराक्रम ए छ गुण छे तेने निरंजन निराकार महाप्रतापो प्रभु साहय करे छे.

अवरने सुखी देखी हुं सुखीछुं, एवो भाव राखो. नीति अन सदुपदेशना पुस्तको वांचो, के जथो बुद्धिवधे अने हित थाय. जे मनुष्यमां विद्या, पराक्रम अने धर्म नथी तनो जन्म व्यर्थ समजशो. सद्गुण अने सदाचरण ए सुखनुं मूळ अने दूर्भाग्यनो नाश करनार छे. इश्वरनो भय ए नीतिनुं मूळ छे. अने सत्य, धर्म, स्वतंत्रता अ-

ने साधारण सुख ए एक प्रजानी उत्तम स्थितिनां चिन्ह छे.

प्रिय आर्यो! दीर्घ द्रष्टि दोडावी विचार करशो तो प्रत्यक्ष देखाशे के ईश्वरे मनुष्यना कान, वाळी आदि घरेणुं घालवा घड्या नथी, पण मात्र सच्छास्त्र श्रवण करवाने अर्थे; हाथ कडां सांकळां अने पोंची वगेरे पहेरवा निर्माण कीधा नथी पण दान धर्म करवाने अर्थे; अने तेमज आ शरीर अत्तर चंदन आदि सुवासीत तेलोनुं लेपन करवा पेदा कीधुं नथी, पण परोपकार आदि देश उन्नतिनां शुभ कार्य करी स्वदेश कल्याणार्थे श्रम लई, स्वदेशनी अने महाप्रभुनी शेवा करी प्रफुलीत थवा माटेज सर्ज्युं छे.

अहो ! आर्य बंधुओ ! मद्यपान कदी करता नहि. मद्यपान करवाथी

शरीरमां व्याधी उत्पन्न थाय छे, मति-
मंद थाय छे, अने तन निर्बळ थाय छे.
मद्यपान हाणीकारक छे. एथी मोटा
कूळ अने देश पायमाल थाय छे. जुओ!
आपणा आर्यवृतना मोटा यादव कू-
ळनो नाश साथी थयो ? दुष्ट व्यसन
नथीज. व्यसन शिखरपर चठेली
आखा देशनी कीर्त्तिने पलकवारमां
निस्तेज करी नांखे छे. जुओ मद्यना
व्यसनथी, प्राचीन काळमां तेनी उत्तम
स्थितिने माटे पंकायलो, पेला शुरा,
साहासिक, अने कळाकौशल्यमां निपूण,
वीरलायुनानि पुत्रोने जन्म आपनार
महान ग्रीस देश, पोतानी पूर्वेनी कि-
र्त्तिनो त्याग करी, अर्वाचीन काळनी
कंगाळ स्थितिने स्वाधीन थइ पड्यो
छे.

तेमज प्रिय आर्यबंधुओ ! नेणां भ-

री निहाळो, तमारा आर्य देशना प्राचीन काळना विजयवंत विरला क्षत्रीयोधाओ, तेमज शुरा रजपूत लडवाइआओ, आर्य देशनुं रुप, रंग अने शृंगार, आर्यवृत माताना कूखने धन्य धन्य कहेवडनार सपुत्रो, रणक्षेत्रमां पाछी पानो कहाडवा स्वप्नामां पण समजला नहि तेवा शूर विरो, रणक्षेत्रमां शत्रुना सैन्यने मरतां मरतां पण त्राहि त्राहि पोकरावी, चिरकाळ नाम करी जणार प्रकाशमान योध्धायो, अने पोताना स्वदेशना कल्याणार्थे स्वदेशाभिनना उकळता लोहाथी लालचोळ बनी गयेला, पोताना प्यारा देश अने धर्मनु, विदेशी विक्राळोना घायल करे एवा झेरी बाणो अने भालानी थती वृष्टिमांथी रक्षण करवाने, पोतानो प्यारो प्राण अर्पण करवा तत्पर थयेला, अने

ते प्रमाणे करी पोतानी कीर्ति, आ अवनिने विषे अमर करी जनार आ आर्य मातानां कूळदीपक पुत्रो, रणक्षेत्रनां रमकडां, अने प्रतापवान क्षत्री अने रजपुत वीरो, के जेओ अफीणादि व्यसनरूपी घातकी शत्रुना, तेओनी उपर जय मेळववाथी, केवा कंगाळ अने दया आणवा जोग स्थितीने शरणे जइ चडया छे. वळी तेओ पूर्वनुं शौर्य अने हिमत तजी केवा कायर अने बायला बनी गया छे, अने बीकणथइ पूर्वना माफक कीर्ति संपादन करवा केवा पाछळ पडी गया छे? अरे! ए साथी! मात्र अफीणआदेना आते व्यसनथीज. तेमज जुओ व्यसनथी मराठा अने मुसलमानोना विजयी राज्योनो केवो अंत आव्यो छे!

प्रिय देशी बंधुओ! प्राचिन इतिहासना पानां उथलावी जुओ, के व्य-

सने केवां केवां मोटां महाभारत घातकी कामो कर्यां छे, केवा केवा देशोने परतंत्र कीधाछे, अने केवा केवा महान पुरुषोने महान संकटोमां रोळ्यां छे? विचार करी व्यसननो त्याग करो. भांग गांजादिक व्यसननो संघरो न करो. सादापणामां सद्गुण संपादन करी दुर्गुणोने दूर नाखी एक सर्व शक्तिमान सर्वेश्वरनी प्रार्थना करी, विविध प्रकरनां सर्व व्यसनोथी विमुक्त रहेवुं एज सर्वथा उत्तम छे.

कोइनो पण गुप्तवान प्रसिद्ध करवी नाह. पुरुषार्थ करवानो प्रयत्न करो. संकट समये धिरज धरो सद्गुणोनुं संरक्षण करो. विपत्ति काळमां पण कदि दुराचरण वापरता नहि. ओछामां ओछा बे कलाक पण इश्वर भक्तिमां नित्य निमग्न रहो. स्वार्थ करतां पर-

मार्थने धोको लागे अेवुं कदि करवुं नहि. राज्यमां ननो मोटो अधिकार मळशे तो मात्र पगार उपरज जीविका चलावजो. निस्पृहपणे अने निस्पक्षपातपणे वर्तजो. लांच कदि लेता नहि. कोइए तमारा उपर उपकार कर्यो तो तेनो बदलो उपकारथीज वाळजो, अने कदापि कोइए अपकार कर्यो तोपण तेना उपर अपकार करवाने बदले उपकार करी संतोष पामजो. वेपारने विषे कपट कावत्रां कदि करता नाहे. क्लेश कदी करशो नाहे.

## छप्पो.

करो कदी मत क्लेश, काळजु कोमळ राखो,
कूळनुं कापे मूळ, कुसंप कापी नाखो,
कहाडे कीमतीकाठ, कुभाषण शीखवे लाखो,
करे सुकीर्ति कमी, कष्ट आपे छे लाखो,
क्लेश, कुसंप, कंकासने, कर्ज आर्तुं कादुं करो,

कहे मित्र करगारि आते, क्लेश नाम सहु परहरो. १

ज्ञाति संबंधी अने धर्म संबंधी अ-
योग्य रीते विना प्रयोजने क्लेश वधा-
रता नहि. समयने अनुसरतां, योग्य
शुभाषित अने मधुर वेण बोलवां ए
विद्वज्जननुं एक लक्षण छे. एकथी
अधीक स्त्री परणी गळे जोतरुं वळ-
गाडवुं ए इश्वरी नियमथी उलटुं, अने
अतिशय संताप भरेलुं छे. आ संसार-
मां लग्ननो पवित्र गांठथी प्रेमनो घा-
डो संबंध स्त्रीए, ज्ञानी, सद्गुणी, सा-
हसिक अने सबळ एवा पुरुष साथे
अने पुरुषे घरनुं भूषण, सद्गुणवाळी अने
सुशिळ स्त्री साथे बांधवो, के जेथी स्त्री
पुरुषो आ सृष्टिनुं खरुं सुख अने वैभव
भोगववा भाग्यशाळी बने. आ लोकने
विषे मात पिता जेवुं बीज कोइ पूज्य
नथी, एवुं समजी तेओनी सेवा

करो, अने तेमनी वृद्धावस्थामां तमारो धर्म-समजी तेओनी रुडी रीते चाकरी करो.

पुत्र करतां नीति अने भक्ति उत्तम छे एवुं जाणी, जो कोइने पुत्र प्राप्ति न थती होय तो तेणे शोक नहि करतां, ईश्वर इच्छा प्रमाणी, नीतिने मार्गे वर्ति सर्वदा परमात्मानुं ध्यान धरवुं जोइए. कोइनुं पण करज कर्युं, तो ते फीटाडवानी काळजी अने इच्छा राखो. करज करी पाछु न वाळवुं ए एक जातनी चोरी छे.

उद्योग सर्व सुखनुं साधन छे. कोई पण पदार्थ वगर उद्योगे पेदा थइ शक्तो नथी. निंद्रावश थयेला विकाळ सिंहना मुखमां कोइ भक्ष मुकी जतुं नथी. उद्योगथी सुखरुपी फळ प्राप्त थाय छे. उद्योगी पुरुषोने परम

कृपाळु परमेश्वर सदा सहाय करे छे. माटे भाइओ उद्योग करो.

उदार बुद्धि मनुष्यनुं भूषण छे, अने नीच बुद्धि दुर्जननुं लक्षण छे. संसारमां त्रण प्रकारनां मनुष्य कह्यां छे. १ उत्तम, २ मध्यम अने ३ कनिष्ट.

१ जे उत्तम पुरुषो छे तेओ देश उन्नतिनुं, अेटले देशी बंधुनुं कल्याण थाय अेवुं शुभ कार्य, अति उत्साहथी आरंभे छे, तेमज असंख्य विघ्नो सामे टकर झीली, खंतिपणुं राखी तेमां जय मेळववा पोतानुं तन, मन अने धन अर्पण करवा सदा तत्पर रहि, अंते इश्वर कृपाथी जय मेळवे छे; वळी स्वार्थ तजी परमार्थने अर्थे पोतानो प्रिय प्राण आपवा पण पलकवारनो विलंब करता नथी, तेओ संकटने समये सदाचरणथी डगता नथी, निति अने

भक्तिने पोताना प्राण करतां पण प्रिय गणे छे, अने स्वदेशाभिमाननुं उकळतुं खोलतुं लोही, जेओना शरिरना अवयवोनी दरेक रगोमां रात दीन जोशबंध वह्या करेछे, तेओना त्हृदयमां दयानो निर्मळ झरो हरनिश वह्यां करे छे, तेओ निषकपटपणे वर्ति पोतानुं अतःकरण शुद्ध राखे छे, अने तेओ काम्म, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर- आंदि मनुष्यना षट रीपुने कदि वश थता नथी. आहा! धन्यछे एवा विरला उत्तम पुरुषोने! धन्य छे एवो भाग्यशाळी माताओने के जेओनी फूखे आवां रत्न प्रगट थाय छे! अने धन्य छे ते किर्तिवंत अने विजयी देशने के जे आवा उत्तम देशहितकारी नरोने जन्म आपे छे!

२. जे पुरुषो मध्यम छे तेओ आ-

नंदर्थी शुभ कार्यनो आरंभ करशे पण विघ्न हठी जइ, कंटाळो खाइ, कायर-पणे ते तजी देशे. स्वार्थपण साधसे, अने परमार्थपण करशे. तेमज सर्व वातमां मध्यम रहेशे.

३. पण जेओ कनिष्ट छे तेओतो शुभ कार्य करवा कदी प्रयत्न करशेज न-हि. "स्वार्थ" "स्वार्थ" अने "स्वार्थ" अेज शब्दोनी माळा भज्यां करशे परमार्थ करवानो पलक वार पण विचार लाव शे नहि. स्वार्थ साधवा हजारोनां ग ळां विंधशे. परमार्थ शब्द तेओने का-ळजु कोरी नाखनार तीर जेवो लागशे. धिक्कार छे आवा निच पुरुषोने! खरे खर तेओ मात्र पृथ्वी माताने भार दे-वानेज जन्मता हशे. आवा पुरुषो पोतानी जनेतानी कूख लजवे छे.

प्रिय आर्यो! उत्तम आर्यो! तमे

प्रथमथीज उत्तम कहेवाता आव्या छो, तमारा वंशनां पूर्वेना सिंह बच्यांओ, उत्तम कार्यों करी, "उत्तम" नी श्रेष्ट पद्वि मेळवी गया छे, ते "उत्तम" पद्विना रुडा प्रतापथी, तमारा पूर्वजो, तमारा देशने पृथ्वीनी दसे दिशाए प्रख्यात करी गया छे, तमारा देशने कीर्ति रुपी दान आपी गया छे, अने तमारा देशने जगतना इतीहासोना पानामां प्रकाशीत करी गया छे. देशांशी उत्तम कूळथी पेदा थयेला आर्यो? तमारा व्हाला आर्यवृतने विशे एक अंग्रेजी विद्वान केवुं उंचुं मत आपे छे, ते सांभळो. ते कहे छे के "वृद्य भरतखंडनी भूमि, पुरुषतानुं पालणुं तने वंदन छे! सैको वर्षना निर्दय उपद्रवो (हल्ला) पण जेने विस्मरणनी धूळ नीचे ढांकी शक्या नथी,

એવી પૂજ્ય અને સમર્થપાળક માતા પ્રણામ! શ્રધા વા સત્યતાનો, પ્રેમની, કવિતાની અને શાસ્ત્રની પિતાભૂમિ! તને નમું છું! તારા ભૂતકાળનો (મહિમા) અમારા પશ્ચિમના (યુરોપના) ભવિષ્યમાં સજીવન થાઓ એવું માગીએ છીએ."

આહા! અર્વાચીન કાળના વિદેશી મહાન વિદ્વાનો તમારા આર્ય દેશની આવી સ્તુતિ ગાય છે, અને ભૂતકાળનો મહિમા પોતાના દેશમાં આવે એવું ઇચ્છે છે તો પૂર્વે આ તમારો વ્હાલો આર્યવૃત, વિદ્યા, કળા કૌશલ્યાદિક બાબતોમાં કેવી સર્વોત્તમ સત્તા ભોગવતો હશે!

વળી એક અર્વાચિનકાળનો આર્ય વિધ્વાન્ કહે છે કે "અહો! પ્રચંડ અદ્ભૂત વિચિત્ર મૂર્તિ! જે ભૂમિપર આ-

श्रयपामी महान आर्य विद्वानोअे वेद
रुपी कीर्तिना अचळ अमरदूर्गो बां-
ध्या ! जे भूमिपर सूर्यवंशी अने चंद्र
वंशी क्षत्रीओअे महा पराक्रमो करी य-
शना हार पेहेर्‍या? जे भूमिपर महाभा
रत तथा रामायणमां वर्णवेलां पराक्र-
मो थयेलां! जे भूमिपर श्रीराम, विक्र-
माजीत, शालीवान, सीधराज, कुमार
पाळ, शीवाजी वगेरे यशश्वि पुरुषो
ए कीर्ति कळगी मेळवेली ! जे भूमी-
पर अेवा महान पुरुषो जन्मेला के जे-
मणे पोतानी नवेनिद्ध अने अष्टमा-
सिद्धनो त्यागकरी कनक कांत्तानो स्प-
र्श पण न करवा निश्चय करेलो अने
जेओ ते प्रमाणे वर्तेला ! जे भुमीपर
पतिव्रतास्त्रीओ पोताना भरथारनी पा-
छल सती थयलीओ ! जे भूमीपर म-
नु, पाणीनी, धनवंत्री, व्यास, वाल्मि-

क कालीदास वगेरे महापंडीतोओ देह धारण करी देशने नवालोचनो रुपी दान दीधेलो! जे भूमिओ नाना प्रकारना दुःखो सेंकडो वर्ष सहनकरी पोतानो धर्म तथा रुढीओ जालवी राखेली! तेवातेवा आ आर्यदेशनी भयानक पण करुणाळ अने दयाळ मूर्तिनी झांखीकरीने कया आर्यनी सर्व रोमावळी आनंदयुक्त नहि थाय!"

पण अरे! अर्वाचीनकाळमां तमारा आर्यदेशनी, तेमज आर्यवंसना छोरुओनी, ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मणोनी, शुराक्षत्रीओनी, वेपारमां विरला वैश्यनी, अने दास्तवमां प्रवीण शाणा शुद्रोनी शी अवस्था! यूरोप, अमेरिका आदि देशोना महान विद्वानोने आकर्षण करनार उत्तम आर्यधर्मनी शी स्थिति अने जेनी पूर्वनी कारीगरीना उदयना किरणो अर्वा

चीनकाळना विदेशी विद्वानोने आश्चे-
र्यतामां निंद्रा वश करी नाखे ं, ते
कारीगरीनी शी दशा!

अहो प्रिय आर्यो? अरे क्यां छे त
आर्यत्व? क्यां छे ते आर्य भूमिपर थ-
येलां पराक्रमो! क्यां छे ते युध्यरंग!
क्यां छे ते प्रेम शौर्य! क्यां छे पेली
आर्यवृतना त्दयमां वास करी रहेली
सरस्वति, लक्ष्मिजी आदि महादेवि-
ओ, अने संपेश्वर बळदेवजी आदि म
हादेवो ! अने टुंकमां क्यां छे पेला
आर्य कूलदीपक पुत्रो अने पुत्रीओ!
अरे हालमां तो कंइ द्रष्टिए पडतुं नथी.
सच्चिदानंद मग्नमहस्त रूपीओनां द-
र्शन दूर्लभ थई पड्यां छे. ब्रह्मज्ञानी
ब्राह्मणो पोतानुं श्रेष्टपणुं तजी, विद्या
हिण बनी भिक्षावृतिनो नीच धंधो
लेई बेठा छे, रणक्षेत्र धुजावनार यु-

ध्य महामस्त क्षत्री विरो अने रजपुतो अफीण आदि व्यसनोना भोग थइ शौर्य हिण, अने कीर्तिहिण थइ पड्या छे,

वेपारी वर्ग वेपार भागी पडवाथी मोढा पर तमाचो मारी मोढु रातुं राखी चिंतारुपी चितामां शोकाग्निथी बळी उदाशोमां पोताना दिवस निर्गमन करे छे; अने बीचारा सुद्रोने तो "अंनने ने दांतने वेर थइ पडयुं छे." तेज प्रमाणे धर्म, संसारी रीवाजो, देशी कारीगरी आदिक बाबतोमां आ आर्यवृतना वासीओ दया आणवाजोग स्थितिना भोग थइ पड्या छे.

अरे! अर्वाचीनकाळमां स्वतंत्रतानी आनंदमय ल्हेरोथी मग्न थवा दूर्भाग्य थइ पडेला पण अंग्रेजना राज्यथी सुखी थयेला आर्यो! जागृत थाओ! संपरुपी सुंदर सस्त्रा सजो, कमर कसो

देश सुधारारुपी रणक्षेत्रमां घुमो; संसारी आदि रीवाजोमां सुधारो करो, सद्गुणोनो सत्कार करो, दुर्गुणोने दूर करो, लक्ष्मी विदेशजती अटकावो, वेपारनी वृद्धी करो, आर्यवृत माताना उगता युवान पुत्रोने तेआना धर्म समजावो, अने अर्वाचीन काळनी स्थिति, श्रष्टिमा अस्तोदयना निमयनी मात्र साधणभूत छे एम समजो, खेद युक्त न थतां, स्वदेश सुधाराना साहीत्यो सजवा सर्व आर्यो एकमतथी तत्पर थइ पूर्वेना यश, पूर्वेनी किर्ति अने पूर्वेनो वैभव भोगववा समर्थ थइ, विद्यादिक बाबतोमां तमे आर्य वंशना अमुल्य रत्नो छो, आर्य माताना कूलदीपक छो, अने आर्य वंसना यशश्वि बच्यांछो एवुं प्रत्यक्ष देखाडी आपो. ओ इश्वर हवे दयालावी मारा आर्य जनो-

उपर कृपा कर, तमने सन्मति आप, तेओ स्वदेश सुधाराना उत्तम कार्यो करे अेवी तेओना हृदयमां प्रेरणा कर अने जे उत्तम कार्यो करवा तेओ इच्छे तेमां साह्य करी तेओनो जयजयकार कर एज मारी खरा अंतःकरणनी प्रार्थनाछे एज मारी अभीलाष छे. अने एज मारी मागनी छे.

